1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
योगीराज श्रीकृष्ण
के 5252वें जन्मोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 47, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 अगस्त, 2024 से रविवार 25 अगस्त, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

गुरुकुल की परम्परा और विरासत को वर्तमान प्रशासन ने लगाया दाँव पर

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार में सह शिक्षा की आहट : आर्यजगत में भारी क्षोभ

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुलीय परंपराओं को तोड़ा जा रहा है : बेटियों और बेटों के लिए अलग-अलग कैंपस - तो सहशिक्षा का षड़यन्त्र क्यों?

प्रायोजक सोसायटी (आर्य प्रतिनिधि सभाओं) ने जताई घोर आपत्ति : निर्णय वापस ले प्रशासन

मामले में दखल हेतु विश्वविद्यालय की प्रायोजक सोसायटी-आर्य प्रतिनिधि सभाओं ने यू.जी.सी. को लिखा पत्र

गत दिनों में जानकारी मिली कि गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार में कुछ पाठ्यक्रमों में बेटियों को भी प्रवेश दिया जाएगा, यानि वे अब पुरुषों के साथ ही पढ़ेंगी। अगर ऐसा हुआ तो यह गुरुकुल कांगड़ी की 125 वर्षों की परम्परा और विरासत के साथ खिलवाड़ होगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हरिद्वार में जब इस गुरुकुल को खोला था तब आर्यसमाज के नेता आचार्य रामदेव जी ने कन्या गुरुकुल देहरादून खोला, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस कैम्पस को केवल पुरुषों को पढ़ाने के लिए और देहरादून को महिलाओं की शिक्षा के लिए सुरक्षित किया था। फिर आज गुरुकुल प्रशासन द्वारा सह शिक्षा का षड़यन्त्र क्यों रचा जा रहा है? इससे सारे आर्य जगत में क्षोभ व्याप्त है। विश्वविद्यालय की स्वामिनी प्रायोजक संस्थाओं-आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा एवं दिल्ली द्वारा इस पर घोर आपत्ति करते हुए इसे तुरन्त वापस लेने का निर्देश किया गया है, साथ ही यू. जी.सी., शिक्षा मन्त्रालय एवं प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से भी हस्तक्षेप करने का निवेदन किया गया है। इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श एवं आगामी कार्यवाही करने के लिए प्रायोजक सभाओं की एक विशेष बैठक शनिवार 24 अगस्त, 2024 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में आमन्त्रित की गई है।

विस्तृत समाचार/जानकारी आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

दिल्ली आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा एवं वेद प्रचार मंडलों द्वारा

बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं की रक्षा हेतु जन्तर-मन्तर पर विशाल धरना प्रदर्शन

अमानवीय और असहनीय है बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों हिन्दुओं पर अत्याचार - रविदेव गुप्ता

हिन्दुओं को जागृत करने वाला सजग प्रहरी है - आर्यसमाज - सुरेन्द्र रैली

महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज एक आंदोलनकारी संगठन है, जब भी मानवता पर दानवता हावी होती है, अधर्म, अनीति, अत्याचार, पापाचार की घटनाए सामने आती हैं, तब आर्य समाज मानवता के लिए अपनी आवज बुलन्द करता आया है। अभी पिछले दिनो बांग्लादेश में जब वहां अल्प संख्यक हिंदुओं और अन्य मतावलम्बियों के सामने जीवन-मरण का प्रश्न सामने आया, हंसते-खेलते परिवार उजड़ने लगे, क्रूरता और बर्बरता की हद से गुजरते हुए एक वर्ग विशेष ने छात्र आन्दोलन की आड़ में स्त्री-पुरुष और बच्चों की नृसंश हत्याएं की, आगजनी और लूटपाट जैसे जघन्य अपराधों को अंजाम दिया। संक्षेप में कहें तो मानवता पर दानवता पूरी तरह हावी होने लगी, भारत में अल्प संख्यकों के रहनुमा बनने वाले विश्व के सत्ताधीशों ने मौन साध लिया तब आर्य समाज ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा हेतु अपनी आवाज बुलन्द की।

आंदोलन के इस क्रम में 17 अगस्त 2024 को जंतर-मंतर पर आर्य समाज द्वारा विशाल धरना प्रदर्शन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा, अखिल भारतीय

- शेष पृष्ठ 4 एवं 7 पर

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी, गृहमन्त्री श्री अमित शाह एवं बांग्लादेश के राजदूत को पुलिस के माध्यम से भेजा ज्ञापन

आर्यसमाज के रोष प्रदर्शन में मंच पर उपस्थित दिल्ली आर्य समाज के अधिकारी सर्वश्री विद्यामित्र ठुकराल, ओम प्रकाश आर्य, राकेश आर्य, कृपाल सिंह, गजेन्द्र चौहान, रविदेव गुप्त, सुरेन्द्र रैली, सतीश चड्डा, अरुण प्रकाश वर्मा, मुकेश आर्य, कीर्ति शर्मा एवं अन्य महानुभाव।

देववाणी-संस्कृत

हमारा जीवन यज्ञमय हो

वेद-स्वाध्याय

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। मान्तः स्थुर्नो अरातयः।।
-ऋ॰ 10। 57। 1; अथर्व॰ 13।1। 59
ऋषिः - बन्धु सुबन्धुः।। देवता - विश्वेदेवाः।। छन्दः - गायत्री।।

शब्दार्थ- इन्द्र = हे परमेश्वर! **वयम्** = हम **पथः मा प्रगाम** = सन्मार्ग को छोड़कर न चलें **सोमिनः** = ऐश्वर्ययुक्त होते हुए **वयं यज्ञात् [मा प्रगाम]** = हम यज्ञ को छोड़कर न चलें। **अरातयः** =अदानभाव **नः अन्तः मा स्थुः** = हमारे अन्दर न ठहरें।

विनय- हे इन्द्र, परमैश्वर्यवान्! हम तुमसे ऐश्वर्य नहीं माँगते। हमारी तुमसे याचना तो यह है कि हम सदा सन्मार्ग पर चलते जाएँ, इसको कभी न छोड़ें। सन्मार्ग पर चलते हुए हमें जो कुछ ऐश्वर्य मिलेगा वही सच्चा ऐश्वर्य होगा। जिस किसी प्रकार मिला हुआ 'ऐश्वर्य नहीं होता- उसमें ईश्वरत्व नहीं होता-सामर्थ्य नहीं होतां सन्मार्ग से जो कुछ ऐश्वर्य मुझे मिलेगा, उस ऐश्वर्य को तुझे पाकर हे इन्द्र! मेरी प्रार्थना है कि मैं यज्ञ से कभी विचलित न होऊँ। यज्ञ करता हुआ- उपकार करता हुआ ही मैं उस तेरे दिये ऐश्वर्य को भोगूँ। जो कुछ तुम्हारे द्वारा (तुम्हारे देवों द्वारा) मुझे मिला है, उसे तुम्हें (देवों को) बिना दिए भोगना चोरी है। ऐसा पाप स्वार्थवश हम कभी न करें। यज्ञ को, आत्मत्याग को, परार्थ में आत्म-विसर्जन को हम कभी न भूलें। यज्ञ के बिना भोग भोगना विषपान करना है, अतः हमारी दूसरी प्रर्थाना है कि हम यज्ञ को कभी न छोड़े।

हमारी तुमसे यह प्रार्थना नहीं है कि तुम हमारे शत्रुओं का नाश कर दो। हमारी याचना तो यह है कि हमारे अपने अन्दर 'अराति' न ठहरें। हमारे अन्दर अराति न हों तो बाहर अराति कोई कैसे हो सकता हे! अराति, अर्थात् अदानभाव हमारे अन्दर क्षण-भर भी न ठहरे, क्षण-भर के लिए भी न आये। अदानभाव होते हुए यज्ञ असम्भव है, अतः हमारा एकमात्र शत्रु अदानभाव ही है। यह अन्दर का शत्रु ही हमारा शत्रु है। हे प्रभो! इससे हमारी रक्षा करो। फिर बाहर के किसी शत्रु की हमें परवाह नहीं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कोलकाता केस - कहीं अपराधी आपके आस-पास तो नहीं?

डॉक्टर से दरिंदगी के मामले में कोलकाता ही नहीं बल्कि पूरे देश में विरोध प्रदर्शन देखने को मिला। कई शहरों के डॉक्टर हड़ताल पर चले गए थे। हाईकोर्ट के आदेश के बाद मामले की जांच सीबीआई के हाथों में चली गई। अब सीबीआई इस केस की परतें खोल रही है। इस बीच सुप्रीम कोर्ट ने भी इस केस पर स्वतः संज्ञान लिया और टास्क फोर्स का गठन किया। कोर्ट ने सुनवाई के दौरान कड़ी टिप्पणियां कीं। कोलकाता की घटना के बाद एक बार फिर बात महिलाओं के खिलाफ होने वाले रेप, यौन उत्पीड़न, यौन हिंसा, छेड़छाड़ की हो रही है जिससे इस देश की क्या बच्ची, क्या युवा और क्या बूढ़ी महिला। कोई भी अछूती नहीं है! कोलकाता में डॉक्टर के साथ हुई हैवानियत से पूरा देश दहला हुआ है। लड़कियों की हालत और बुरी है। देश विकास के समंदर में डुबकी लगा रहा है और औरतों को छुपने-बचने का ऐसा उपाय खोजना पड़ रहा है जहां वे बस सुरक्षित हों। पश्चिम बंगाल के कोलकाता में जूनियर महिला डॉक्टर के साथ रेप और मर्डर की घटना के बाद आरजी कर मेडिकल कॉलेज को लेकर तरह-तरह की बातें सामने आ रही हैं। आज यह सवाल सबके सामने है, बरसों पहले चाहें निर्भया से दरिंदगी करने वाले राक्षस हों, या शिमला जिले के कोटखा की एक छात्रा के साथ स्कूल से लौटते समय दरिंदगी, यूपी का हाथरस या कासगंज का केस हो, दरिंदगी हर जगह एक जैसी है। रेप और दरिंदगी करने वाले भले ही अलग-अलग राज्यों से थे, उनकी भाषाएँ अलग थीं, उनका पहनावा अलग था, किन्तु सोच एक थी। और आज सवाल भी यही है कि एक जैसी सोच के ये अपराधी कहाँ से इस भारत में पनप रहे हैं? कौन है जो इस दरिंदगी की सोच को जाम पिला रहा है?

.....कोलकाता में डॉक्टर के साथ हुई हैवानियत से पूरा देश दहला हुआ है। लड़कियों की हालत और बुरी है। देश विकास के समंदर में डुबकी लगा रहा है और औरतों को छुपने-बचने का ऐसा उपाय खोजना पड़ रहा है जहां वे बस सुरक्षित हों। पश्चिम बंगाल के कोलकाता में जूनियर महिला डॉक्टर के साथ रेप और मर्डर की घटना के बाद आरजी कर मेडिकल कॉलेज को लेकर तरह-तरह की बातें सामने आ रही हैं।...आज यह सवाल सबके सामने है, बरसों पहले चाहें निर्भया से दरिंदगी करने वाले राक्षस हों, या शिमला जिले के कोटखा की एक छात्रा के साथ स्कूल से लौटते समय दरिंदगी, यूपी का हाथरस या कासगंज का केस हो, दरिंदगी हर जगह एक जैसी है। रेप और दरिंदगी करने वाले भले ही अलग-अलग राज्यों से थे, उनकी भाषाएँ अलग थीं, उनका पहनावा अलग था, किन्तु सोच एक थी। और आज सवाल भी यही है कि एक जैसी सोच के ये अपराधी कहाँ से इस भारत में पनप रहे हैं? कौन है जो इस दरिंदगी की सोच को जाम पिला रहा है?....

आप खूब गहराई से अध्यन कीजिये सत्तर के दशक से पहले हिदी सिनेमा में रेप की संस्कृति को बढ़ाने वाली आपको शायद ही कोई मूवी मिले लेकिन इसके अगले दशक से हिन्दी सिनेमा में डायलोग हो या सीन मानों हिन्दी सिनेमा सॉफ्ट पोर्न बनता चला गया। इन फिल्मों में परोसा गया बोल्ड कंटेंट, जिनकी स्टोरी भले ही दर्शकों की समझ नहीं आती,मगर इन फिल्मों में बोल्ड और अडल्ट सीन्स की भरमार होती है। साल 1997 में मूवी रिलीज हुई थी आस्थाः इन द प्रिजन ऑफ स्प्रिंग इस मूवी में रेखा ने हद से ज्यादा बोल्ड सीन्स दिए थे, जिन्हें देखकर दर्शक भी हैरान रह गए थे। इसके बाद अभी हाल ही में बेहद हिंसक फिल्म होने के बावजूद 'एनिमल' को समाज के सामने परोसा गया। एक महिला से जानवर की तरह सलूक किया गया, उसे सिर्फ बहन-बेटी या माँ नहीं बल्कि एक जिस्म का सामान बनाकर परोसा गया यदि ऐसी हिंसक फिल्में, जिसमें मुख्य किरदार ही हिंसक गतिविधियों में शामिल है तो युवा वर्ग किस दिशा में जाएगा? निश्चित रूप से यह बेहद चिंता का विषय है। आखिर ऐसी फिल्मों को क्यों बनाया जा रहा है? सरकार के अधीन बैठा सेंसर बोर्ड ऐसी फिल्मों को रिलीज करने की अनुमति कैसे दे देता है? क्या फिल्म जगत अनियंत्रित हो गया है?

यह केवल कोई पहली या आखिरी मूवी नहीं है। कई साल पहले "खलनायक" नामक फिल्म आई थी। युवा खुद को खलनायक जैसा बनने पर उतारू हो गए थे। "डर" और "अंजाम" जैसी फिल्मों ने एकतरफा प्यार और बदला लेने की भावना को काफी बढ़ावा दिया। इमरान हाशमी स्टारर फिल्म 'मर्डर' आई, इस फिल्म में बोल्ड सीन परोसने के अलावा को संदेश नहीं था। इसके अलावा, बॉलीवुड एक्ट्रेस नेहा धूपिया स्टारर फिल्म 'जूली' आपको याद होगी। फिल्म में दिखाया गया था कि लड़के बार-बार जूली का शारीरिक शोषण करते हैं। साल 2012 में रिलीज हुई फिल्म 'जिस्म 2' भी बोल्ड कंटेंट वाली लिस्ट में शामिल हुई, फिल्म में सनी लियोनी ने हद से ज्यादा बोल्ड सीन्स दिए थे।

सवाल है आखिर ये मूवी किसके लिए समाज में परोसी जा रही है। इससे फिल्म निर्माता, अभिनेता या अभिनेत्री के अलावा समाज को क्या फायदा होता है? बल्कि समाज में आपराधिक प्रवृत्ति, दूषित मानसिकता के लोगों को बल मिलता है। उन्हें लगता है अगर उनके हीरो अभिनय जगत के स्टार रेप और मर्डर कर सकते हैं तो वो भी उनका अनुसरण कर सकते हैं।

थोड़े समय पहले कबीर सिंह मूवी आई थी। कबीर एक ऐसा नौजवान है जो स्वतंत्र है। अपनी सोच रखता है। उसी पर जीता है। अपनी हर भावना खुलकर व्यक्त करता है। सामाजिक नियमों को वह कुछ नहीं समझता। उसके जीवन का लक्ष्य सिर्फ यौन संबंध बनाना रह जाता है। आखिर ऐसी मूवी की क्या जरूरत है?

यही कारण है इन्हें देखा-देखी समाज बदल रहा है। समाज को हिंसा अधिक पसंद आने लगी है? कबीर सिंह और फिल्म एनिमल को देखकर तो यही प्रतीत हो रहा है। बेहद हिंसक फिल्म होने के बावजूद उसे काफी लोगों ने पसंद भी किया। सोचिए, उसे पसंद करने वाले कैसी मानसिकता के लोग होंगे? यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर सामूहिक रूप से समाज को चितन और मंथन करने की जरूरत है। ऐसी फिल्में अच्छे नागरिक पैदा करने के बजाय समाज में जानवर ही खड़े करेंगी।

इसके अलावा, सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म रेप का मुख्य कारण हैं। इस पर जो कंटेंट परोसे जा रहे हैं, उसे रोकना जरूरी है। जो लोग मनोरंजन के नाम पर वीभत्स परोस रहे हैं, उनके खिलाफ समाज को एक होना पड़ेगा। इसमें एथिक्स कोड लॉ के रूप में होना चाहिए। साथ ही, सीन की, थीम की, कपड़ों की और भाषा की परिमित लिमिट तय होनी चाहिए। इसके बाद भी, अगर को डायरेक्टर, प्रोड्यूसर, एक्टर, एक्ट्रेस और फोटोग्राफर नियम का उल्लंघन करता है, तो उसके खिलाफ बलात्कार को उकसाने का केस दर्ज होना चाहिए।

सोचिए, ऐसे कंटेंट से क्या भारत संस्कृति में कंगाल देश नहीं बनेगा? अगर इसी तरह से कंटेंट परोसे गए, तो भारत की हालत अमेरिका की तरह हो सकती है। फिल्मों में रचनात्मक प्रयोग अवश्य होने चाहिए, लेकिन 'एनिमल' जैसे प्रयोग से फिल्म जगत को बचना चाहिए। समाज को सामूहिक रूप से ऐसी फिल्मों का विरोध दर्ज कराना चाहिए। फिल्मों में हिंसा एक हद तक जायज ठहराई जा सकती है। यदि 'एनिमल' जैसी फिल्में बनती रहीं, तो समाज में 'एनिमल' जैसा व्यवहार करने वाले युवाओं को पनपने में देर नहीं लगेगी। यही कारण है कि आज देश के किसी न किसी हिस्से में कोई न कोई लड़की अपनी इज्जत बचाने के लिए चीख रही है। वैसे तो हम अपने देश की संस्कृति और सभ्यता पर नाज करते हैं, लेकिन कोलकाता कांड के बाद पिछले 10 दिनों में यहां पर क्या-क्या हुआ है, उसे जानकर शायद आप भी सोचेंगे कि हमारे पास घमंड करने जैसा कुछ नहीं। कोलकाता में जूनियर डॉक्टर की मौत के बाद जब पूरी दुनिया में इसे लेकर प्रोटेस्ट शुरू हुए, तब भी भारत के किसी न किसी कोने में रेप हो रहा था।

- शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर अमेरिका में आयोजित

वैश्विक आर्य महासम्मेलन (Global Arya Summit) 2024 : एक सिंहावलोकन

प्रस्तुति : प्रो. विनय कुमार विद्यालंकार, प्रवक्ता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं मन्त्री, आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा (भारत)

.....अंतराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन न्यूयार्क अमेरिका में विश्व के लगभग 16 देशों से आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए, जिनमें मॉरीशस से 60 प्रतिनिधि, भारत से 50 से अधिक प्रतिनिधि, इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका के अनेक देशों से आर्यजन उत्साह के साथ उपस्थित हुए थे, अमेरिका के 15 राज्यों में आर्य समाज की इकाइयां हैं उनके भी प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित थे, अमेरिका का सर्वाधिक संख्या वाला प्रतिनिधिमंडल अटलांटा वैदिक टेंपल से पहुंचा था जहाँ से सभा के महामन्त्री श्री विश्रुत आर्य जी हैं, जिसमें 60 से 70 प्रतिनिधि सम्मिलित थे, इसके अतिरिक्त सिंगापुर, डेनमार्क, गयाना, नैरोबी, त्रिनिदाद, नीदरलैंड, नेपाल आदि देशों से प्रतिनिधि उपस्थित थे। रात्रि कालीन भजन संध्या के उपरांत घोषणा की गई की प्रात: काल 6:30 बजे विश्वविद्यालय के हॉकी मैदान में योग की कक्षा लेगी उसमें आप सब लोग भाग ले सकते हैं। मैं क्योंकि पूरे उत्साह के साथ सम्मेलनों में जाने का अभ्यासी रहा हूँ एतदर्थ 19 जुलाई की प्रात: काल ही उठकर जब 6:30 बजे हॉकी मैदान में पहुँचा तो वह दृश्य भी अतुलनीय एवं अनुपम था.....

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150 वें स्थापना वर्ष को लक्षित करके 18 से 21 जुलाई 2024 तक 'वैश्विक आर्य महासम्मेलन' (Global Arya Summit) का भव्य आयोजन न्यूयार्क की Hofstra University Long Island में किया गया। इस सम्मेलन में सभा के अधिकारियों ने मुझे भी आमन्त्रित किया था जो मेरे लिए हर्ष का विषय था। आर्यप्रतिनिधि सभा अमेरिका के साथ मेरा प्रगाढ़ सम्बन्ध है, मैं 2015 और 2018 में एक-एक माह के लिए अमेरिका के विभिन्न शहरों में व्याख्यान देने और उनके आर्य महासम्मेलन में प्रतिभाग करने हेतु जा चुका हूँ, 2020 के कोविड पेंडामिक (कोरोना काल) में लगातार ऑनलाइन व्याख्यान एवं मंत्र व्याख्याएं चलती रही हैं।

इस सम्मेलन में 17 जुलाई की शाम को न्यूजर्सी पहुंचा, अपने स्नेही आर्य परिवार में रात्रि विश्राम के बाद 18 जुलाई मध्यान्तर लगभग 4:00 बजे सम्मेलन स्थल (Hofstra University, Long Island New York) पहुँचा तो विश्वविद्यालय के द्वार में प्रवेश करते ही 'ग्लोबल आर्य सम्मिट' के छोटे-बड़े होर्डिंग्स एवं संकेतक लगे दिखाई दिए तो मन में अत्यंत हर्ष हुआ, स्टूडेंट सेंटर पर स्वागत कक्ष में पहुँचते ही आर्यप्रतिनिधि सभा अमेरिका के आर्य बंधु एवं बहिनें स्वयंसेवक के रूप में सभी का स्वागत करने को तत्पर थे, जिस उत्साह के साथ वे विश्व भर से पधारे आर्यजनों का स्वागत कर रहे थे वह देखने लायक था, आवंटित कक्ष की चाबी देना साथ में नैत्यिक क्रियाओं के लिए एक छोटी किट व परिचय पत्र दिया जा रहा था, स्वागत कक्ष में इस स्वागत की हर्षानुभूति हुई उसके उपरान्त हमसे अनुरोध किया गया कि आप डाइनिंग हॉल में जाकर सूक्ष्म जलपान ग्रहण कर सकते हैं और 5:30 शाम से 7:30 शाम तक भोजन व्यवस्था चलेगी, आर्य महासम्मेलन की भोजन व्यवस्था कितनी उत्कृष्ट कोटि की थी कि उसमें एक पारिवारिक भव्य आयोजन का दृश्य उपस्थित था, जैसे कोई अपने पारिवारिक विवाह आदि कार्यक्रमों में भव्य भोजन व्यवस्था करता है ठीक वैसी ही व्यवस्था दिखाई दे रही थी, बड़ी-बड़ी गोल मेजें जिनमें चारों ओर लगी हुई कुर्सियां, भोजन के स्टॉल, चाय, कॉफी, जूस ,फलाहार एवं विविध प्रकार की भोजन सामग्री यह सब अनायास आकर्षित करता था, भोजनालय से निकलकर जब हम खुले मैदान में पहुंचे तो वहां विश्वविद्यालय के एक स्थान को मंच का रूप दिया गया था उसके ठीक सामने एक सुंदर सुसज्जित यज्ञशाला के दर्शन हुए, यह यज्ञशाला अमेरिका के किसी विश्वविद्यालय परिसर के लिए आश्चर्य जनक दृश्य था, इस यज्ञशाला में जो हवन कुंड था वह आर्यों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ था, (जो आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा भेजा गया था) बहुत भारी तांबे की सीट पर वेदों के नाम, परमपिता परमात्मा का मुख्य नाम 'ओ३म', तीनों मेखलाओं पर अन्य सूक्तियां उभरी हुई दिख रही थी, अमेरिका के किसी विश्वविद्यालय परिसर में यज्ञशाला का निर्माण होना स्वयं में एक सुखद आश्चर्य का विषय था क्योंकि जो लोग पाश्चात्य देशों में जाते हैं वे जानते हैं कि अमेरिका के किसी सार्वजनिक स्थल पर आप अग्नि नहीं जला सकते, अपने घर में भी आप बिना पूर्व अनुमति के हवन नहीं कर सकते, अन्यथा फायर अलार्म बज जाते हैं और सुरक्षा का विषय उत्पन्न हो जाता है, ऐसे देश के विश्वविद्यालय में यज्ञ की अनुमति लेना आर्यप्रतिनिधि सभा अमेरिका के अधिकारियों का बड़ा कार्य था जिन्होंने कितने प्रयासों से यह अनुमति ली होगी। इस सम्मेलन का प्रारंभ 18 जुलाई की सायंकाल एक भव्य संगीत संध्या के साथ हुआ जिसमें आर्यप्रतिनिधि सभा अमेरिका की अनेक आर्यसमाजों से पधारे हुए युवक-युवतियां, किशोर-किशोरियां और बालक-बालिकाएं सुंदर सुमधुर गीतों की प्रस्तुति कर रहे थे, वह सुखद एवं हर्षित करने वाला था, इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित दिनेश पथिक जी की भजन संध्या की भी प्रस्तुति हुई, यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के एडम सभागार में प्रारम्भ हुआ जिसकी बैठने की क्षमता 1100 थी जिसमें लगभग 800 सीट भरी हुई देखकर अत्यंत हर्ष हुआ। आपको बताता चलूं कि अंतराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन न्यूयार्क अमेरिका में विश्व के लगभग 16 देशों से आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए, जिनमें मॉरीशस से 60 प्रतिनिधि, भारत से 50 से अधिक प्रतिनिधि, इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका के अनेक देशों से आर्यजन उत्साह के साथ उपस्थित हुए थे, अमेरिका के 15 राज्यों में आर्य समाज की इकाइयां हैं उनके भी प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित थे, अमेरिका का सर्वाधिक संख्या वाला प्रतिनिधिमंडल अटलांटा वैदिक टेंपल से पहुंचा था जहाँ से सभा के महामन्त्री श्री विश्रुत आर्य जी हैं, जिसमें 60 से 70 प्रतिनिधि सम्मिलित थे, इसके अतिरिक्त सिंगापुर, डेनमार्क, गयाना, नैरोबी, त्रिनिदाद, नीदरलैंड, नेपाल आदि देशों से प्रतिनिधि उपस्थित थे। रात्रि कालीन भजन संध्या के उपरांत घोषणा की गई की प्रात: काल 6:30 बजे विश्वविद्यालय के हॉकी मैदान में योग की कक्षा होगी उसमें आप सब लोग भाग ले सकते हैं। मैं क्योंकि पूरे उत्साह के साथ सम्मेलनों में जाने का अभ्यासी रहा हूँ एतदर्थ 19 जुलाई की प्रात: काल ही उठकर जब 6:30 बजे हॉकी मैदान में पहुँचा तो वह दृश्य भी अतुलनीय एवं अनुपम था, अत्यधिक स्वच्छ एवं व्यवस्थित हॉकी मैदान जिसमें सैकड़ों आर्यजनों की उपस्थिति गदगद कर रही थी, पहले दिन की योग कक्षा को ओहायो से पधारे आईटी इंजीनियर एवं योग प्रशिक्षक श्री मुनीष आर्य जी ने सम्पन्न कराया, इस योगकक्षा में बहुत ही सहजता एवं धैर्य के साथ योग की बाह्य एवं अभ्यंतर शुद्धि की क्रियाओं को संपन्न कराया, जिसमें सूक्ष्म व्यायाम, आसन एवं प्राणायाम से साधना के स्तर तक पहुंचाने का कुशल प्रशिक्षण दिया गया। योग कक्षा के बाद सभी तैयार होकर जलपान ग्रहण कर 9:00 बजे यज्ञशाला में पहुंचे, जिसमें सैकड़ो यज्ञप्रेमी आर्यजनों की उपस्थिति हर्षित कर रही थी, सामवेद पारायण यज्ञ का प्रारंभ हुआ जिसे यज्ञब्रह्मा गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा (भारत) के स्नातक परिषद के अध्यक्ष डॉ कमलेश कुमार शास्त्री जी ने कराया, उनके साथ वेदपाठी के रूप में किसी गुरुकुल के स्नातक या स्नातिकाएँ नहीं थे अपितु अमेरिका के आर्य परिवारों के प्रशिक्षित किशोर-किशोरियां सस्वर वेद पाठ कर रहे थे, यह दृश्य हम सभी को हर्षित कर रहा था कि अमेरिका की भूमि पर आर्य परिवारों के बालक बालिकाओं ने इतना उत्तम सस्वर वेद पाठ किस प्रशिक्षक से सीखा? पता चला कि भारत की भूमि से पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी की स्नातिका आचार्या जाह्नवी जी ने ऑनलाइन माध्यम से इन बालक - बालिकाओं को प्रशिक्षित किया है और सम्मेलन से कुछ समय पूर्व आकर इनके मंत्र पाठ को और उत्तम बनाने में सहयोग किया है। यज्ञ व्यवस्थाओं को आर्यसमाज न्यूयार्क हिल साइड के धर्माचार्य डॉ. अमरजीत शास्त्री व अटलांटा की महिला समाज की बहिन स्वस्ति जी की टीम देख रही थी।

सामवेद पारायण यज्ञ में मुख्य यजमान ज्ञान ज्योति पर्व के अध्यक्ष एवं दयानंद सेवाश्रम संघ के माननीय अध्यक्ष भारत के प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति श्री सुरेंद्र कुमार आर्य एवं श्रीमती नीलम आर्या जी रहे, उनके साथ ही विश्व के अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने यज्ञ में आहुतियां दी, इस यज्ञ की विशेषता यह थी कि इसे अखंड रूप से चलाया गया था, यजमान बदलते जा रहे थे और यज्ञ चल रहा था, यह भी पहला अवसर था कि अमेरिका की भूमि पर किसी आर्य महासम्मेलन में एक वेद का पारायण यज्ञ किया गया हो। यज्ञ के उपरांत मुख्य सभागार के सम्मुख मैदान में ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ जिसमें मुख्य अतिथि श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के संस्थापक श्रीमान् गिरीश खोसला जी, सभा प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी, महामन्त्री श्री विश्रुत आर्य जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कोर समिति के सदस्य श्री विनय आर्य जी, स्वामी देव व्रत जी, स्वामी आर्यवेश जी, साध्वी उत्तमायति जी, युवा संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी, श्री विनय विद्यालंकार जी, श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, आचार्य वाचोनिधि आर्य जी एवं अन्य देशों की सभाओं के अधिकारी, वृद्वज्जन एवं आर्यजन उपस्थित थे, तदुपरान्त प्रात: 10 बजे से 1 बजे तक कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र बड़ी भव्यता के साथ एडम हॉल के सभागार में चला, मंच पर कार्यक्रम में पधारे हुए संन्यासी गण व अनेक अतिथिगण विराजमान थे, इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यूयार्क में भारत के जनरल काउंसलेट आईएफएस अधिकारी श्री बिनय, श्रीकांत प्रधान व भारत से पधारे श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी थे, भारत से आर्यों के माध्यम से सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने भी सम्बोधित किया, अतिथि वृद्वज्जनों व आर्य नेताओं के उद्बोधन हुए, उद्घाटन सत्र का संचालन आर्यप्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी व महामन्त्री श्री विश्रुत आर्य जी ने किया। 1 बजे से भोजन की व्यवस्था भव्य डाइनिंग हॉल में थी। 2:30 बजे से पुन: समानांतर सभागारों में सत्र चलने लगे-अंग्रेजी भाषा व हिन्दी भाषा में पृथक-पृथक सभागारों में कहीं पर महिला सत्र था तो कहीं पर युवा सत्र था, कहीं पर स्वास्थ्य को लेकर चर्चा थी, तो कहीं पर आर्य समाज की भावी योजनाओं को लेकर विश्व के प्रतिनिधियों की बैठक चल रही थी। पूरा विश्व विद्यालय परिसर इस कार्यक्रम की भव्यता व विशालता का साक्षी बन रहा था, विश्वविद्यालय के भवनों में स्थान-स्थान पर ग्लोबल आर्य सम्मिट के जो छोटे-बड़े फ्लेक्स लगे थे वे सबको अनायास ही आकर्षित करते थे।

- शेष पृष्ठ 6 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में मानव निर्माण योजना के अन्तर्गत

शिक्षा के साथ बच्चों को संस्कार देने हेतु 10 दिवसीय बालवाड़ी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

शिक्षा के साथ वैदिक संस्कार देने से सम्भव होगा मानव निर्माण – सुरेन्द्र कुमार आर्य

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य इसके स्थापना काल से ही रहा है। आर्य समाज निरंतर राष्ट्र और मानव सेवा के मूल मंत्र को लेकर आगे बढ़ रहा है। मानव कल्याण की इसी भावना और कामना को साकार करने हेतु भारत के उज्ज्वल भविष्य को संवारने के संकल्प के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में जहां पूर्वोत्तर के आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा क्रांति का विशेष अभियान चलाया जा रहा है, असम,

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं की रक्षा हेतु जन्तर-मन्तर पर विशाल धरना प्रदर्शन

दयानंद सेवा श्रम संघ, आर्य वीर, वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश, दिल्ली के सभी वेद प्रचार मंडलों एवं आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ताओं सहित, अन्य शिक्षण संस्थानों के महानुभावों की उपस्थिति में किया गया। जिसमें श्री सुरेन्द्र रैली, श्री रविदेव गुप्ता, श्री सतीश चडडा,

नई दिल्ली में बांग्लादेश के राजदूत, प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी एवं गृहमन्त्री अमित शाह के लिए पुलिस अधिकारी को ज्ञापन देते आर्यसमाज के अधिकारीगण

श्री कीर्ति शर्मा, श्री बृहस्पति आर्य और अन्य आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री, पुरोहित धर्माचार्य तथा कई महानुभावों ने समूचे आर्य समाज की ओर से रोष व्यक्त करते हुए उदबोधन दिए। ज्ञातव्य है कि जब से शेख हसीना बांग्लादेश छोड़कर भारत आई, तब से ही वहां पर अल्पसंख्यक हिंदुओं के ऊपर अत्याचार और असहनीय प्रहार हो रहे हैं और तभी से आर्य समाज लगातार यह मांग उठता आ रहा है कि वहां पर हिंदुओं सहित अन्य सभी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जाए।

- जारी पृष्ठ 7 पर

योगीराज श्रीकृष्ण जी के 5252वें जन्मोत्सव पर विशेष

प्रेरक जीवन के धनी योगीराज भगवान श्रीकृष्ण

- डॉ. महेश विद्यालंकार

योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज का ऐतिहासिक परिस्थिति में जेल में जन्म हुआ। जन्म से पहले ही मृत्यु के वारण्ट निकल गए। पराये घर में यशोदा माता की गोद में पले। असली माता-पिता वासुदेव और देवकी थे। यशोदा माँ ने माता की भूमिका इतनी सुन्दरता, कुशलता, निपुणता और वात्सल्यपूर्ण निभाई कि लोग असली माता देवकी को भी भूल गए। विकट परिस्थितियों में तथा मजबूर होकर मामा कंस को प्रजा एवं धर्म रक्षार्थ मरवाना पड़ा। श्रीकृष्ण जी का सारा जीवन मुसीबतों संघर्षों कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों से भरा रहा है। निरन्तर आक्रमण संघर्ष, कलह, अशान्ति आदि के कारण और मदान्ध जरासन्ध की बढ़ती ईर्श्या-द्वेष से बचने के लिए मथुरा से दूर वे द्वारिका चले गए। जिससे जरासन्ध का वैर विरोध शान्त हो जाये। अन्त एक बहेलिए के आकस्मिक तीर से हुआ। श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन **परित्राणाय साधूनाम्** सज्जनों की रक्षा हो, **विनाशाय च दुष्कृताम्,** दुष्टों का दलन हो, **धर्म संस्थापनार्थाय** धर्म की रक्षा और अधर्म का नाश हो, इसी उद्देश्य में सारा जीवन निकला। इस उद्देश्य की पूर्ति और कार्यो की सिद्धि के लिये उन्हें नानारूप धारण करने पड़े। उन्हें कई बार विरोध, कष्ट, मानसिक पीड़ा और अपमान का जहर पीना पड़ा। जातीय कलह, संघर्ष तथा बढ़ते मदिरापान के प्रचलन से अन्त में दु:खी रहने लगे। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त श्रीकृष्ण को कभी शान्ति, चैन आराम व सुख से रहने व बैठने का अवसर नहीं मिला। ऐसा अदभुत विलक्षण, सर्वगुण सम्पन्न, मानवता का पुजारी, धर्मशास्त्र, राजनीति, कूटनीति आदि का ज्ञाता युगपुरुष संसार के इतिहास में नहीं मिलेगा।

अपने देवी, देवताओं तथा महापुरुषों के चरित्र व जीवन दर्शन को विकृत एवं कलंकित करने वाली संसार में कोई अभागी जाति है तो वह हिन्दू जाति है। जिसने अपने देवपुरुषों का सत्य स्वरुप जाना, माना और समझा नहीं। जैसा श्रीकृष्ण का भौंडा, विकृत भोगी ओर विकारी चरित्र लोककथाओं, किस्से-कहानियों, सीरियलों, पिक्चरों, फिल्मों आदि में दिखाया व बताया जा रहा है वैसा सच्चे अर्थ में उनका जीवन नहीं था। पुराणों व लोकसाहित्य में उन्हें चोर-जार शिरोमणि, लम्पट, माखन चोर, भोगेश्वर आदि न जाने क्या-क्या लांछन लगाए गऐ हैं। श्रीकृष्ण के नाम पर अश्लीलता, श्रृंगार-भोग वासना, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि मीडिया के माध्यम से परोसा और फैलाया जा रहा है। उनके चरित्र के दैवीय गुणों की गरिमा पर कीचड़ उछाला जा रहा है। यह सत्य है कि श्रीकृष्ण का जीवन गुण, कर्म, स्वभाव, आचरण आदि ऐसा नहीं था जैसा कि आज दुनिया देख व मान रही है। यह हमारा दुर्भाग्य, अज्ञानता, अशिक्षा और मानसिक विकृति रही कि श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्रनायक, इतिहासपुरुष, योगीराज, विशेषणधारी और असाधारण दिव्यात्मा के जीवन को हम कितना नीचे गिरा रहे हैं? यह हम सभी के लिए चिन्तनीय और निन्दनीय होना चाहिए। क्या उनके योगदान का यही प्रतिदान है?

....महापुरुषों की लम्बी परम्परा में भगवान श्रीकृष्ण का नाम सम्पूर्ण मानव जाति बड़ी श्रद्धा, सम्मान, आदर एवं पूजनीय भाव से लेती है। अधिकांश लोग उनमें दैवीय गुण युक्त भाव रखते हैं। भगवान श्रीकृष्ण धर्मात्मा, पुण्यात्मा तपस्वी, त्यागी, योगी, वेदज्ञ, नीतिज्ञ, निरहंकारी, लोकोपकारी युग निर्माता आदि विशेषताओं से पूर्ण महापुरुष थे। उनके व्यक्तित्व, कृतित्व पर न जाने कितना लिखा-पढ़ा सुना और बोला गया है फिर भी उनका वास्तविक प्रमाणिक सत्य जीवन चरित आज हमारे से ओझल हो रहा है। यह उनके प्रति सबसे बड़ी त्रासदी एवं कृतघ्नता है। भारत का सम्पूर्ण धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक पूजा पाठ, धर्म कर्मकाण्ड आदि दो महापुरुषों मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और योगी राज श्रीकृष्ण पर टिका है। इन दोनों दिव्यात्माओं को अलग कर दिया जाय तो कुछ भी पौराणिक जगत के पास नहीं बचता है। भगवान श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व चुम्बकीय, अद्वितीय, दिव्य भव्य, प्रेरक, आकर्षक एवं बहुआयामी था। इसी के कारण हजारों वर्षों के घात-प्रतिघातों, परिवर्तनों और विवादों के झेलने के बाद आज भी पूजित, स्मरणीय, वन्दनीय एवं अलौकिक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित व सम्मानित हैं। महाभारत काल में अनेक विशेषताओं से युक्त महापुरुष हुए, मगर सभी का जन्म दिन नहीं मनाया जाता है। सूचना, विज्ञापन, पत्रक आदि के बिना सबको भगवान श्रीकृष्ण की जन्मतिथि याद है। जितनी धूमधाम, सजावट-बनावट, भव्यता, श्रद्धा व पूज्यभाव से श्रीकृष्ण का जन्मदिन विश्वस्तर पर प्रदर्शित और मनाया जाता है, ऐसा और किसी का नहीं मनाया जाता है। श्रीकृष्ण मानवता के रक्षक, पालक तथा उद्धारक थे। इसलिए मानव समाज उनका जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाता है।.....

आर्य समाज का जन्म ही सत्य के शोधन और उसके प्रचार-प्रसार के लिए हुआ है। इसका नारा रहा है जगाते रहो, जागते रहो? आर्य समाज ने अन्य क्षेत्रों में योगदान के साथ-साथ महापुरुषों के उज्ज्वल धवल निर्मल जीवन चरित्रों को संसार के सामने रखा। उनके चरित्रों के ऊपर जो गन्दगी, लांछन, मनगढन्त, वे सिर-पैर की बातें और विकृतियां आई, उनकी प्रामाणिकता एवं तर्क-प्रमाण से सफाई की। उनके देवत्व एवं महापुरुषत्व की वकालत व रक्षा की। जिस सत्य स्वरूप में आर्यसमाज अपने महापुरुषों को मानता, पहिचानता और बताता है, उस रूप में संसार नहीं जानता है। अधिकांश लोगों में यह भ्रान्ति, अज्ञान व ना समझी है कि आर्य समाज किसी देवी-देवता, महापुरुष आदि को नहीं मानता है? यह भूल व भ्रांति है, जितनी सच्चाई, गहराई और वास्तविक रूप में आर्य समाज अपनी सभ्यता, संस्कृति धर्मग्रन्थों तथा महापुरुषों को जानता-मानता एवं मान-प्रतिष्ठा देता है, शायद दूसरा न दे सके। आर्य समाज अपने महापुरुषों के चित्र का सम्मान करता है और चरित्र के अनुकरण की प्रेरणा देता है। महापुरुष और बड़े बुजुर्ग हमारे प्रकाश सतम्भ होते हैं, जिनसे हमें जीवन के लिए रोशनी मिलती है।

आर्य समाज श्रीकृष्ण जी का गुण-कर्म-स्वभाव, जीवनदर्शन आदि से युक्त महापुरुष के रूप में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करता है। उन्हें अवतारी ईश्वर के रूप में नहीं मानता है। ईश्वर एक है। वह जन्म-मृत्यु तथा अवतार के बन्धन से परे है। वह कभी अवतार नहीं लेता है। ईश्वर और भगवान में मौलिक अन्तर है-भगवान शब्द पदवी व सम्मान है। मनुष्य गुण, कर्म, स्वभाव, आचरण से भगवान बन सकता है, मगर ईश्वर नहीं हो सकता है। ईश्वर चित्र-विचित्र जड़ चेतन सृष्टि को बनाता-चलाता, समस्त जीवों का पालन करता, संहार की शक्ति रखता और जीवों के कर्मानुसार फल देने की सामर्थ्य रखता है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, नित्य आदि गुणों से युक्त हे। वह सृष्टि का आदि और अन्त है। परमात्मा कभी मनुष्य देह धारण नहीं करता और उसे देह धारण करने की आवश्यकता भी नहीं है। ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान व वैराग्य इन छ: को **भग** कहा गया है-जिनके पास ये छ: बातें हैं उन्हें भगवान कहा गया है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और योगीराज भगवान श्रीकृष्ण दोनों महापुरुषों के पास ये छ: बातें थी। इसलिए उन्हें भगवान की पदवी से सम्मानित एवं प्रतिष्ठित किया गया। आम प्रचलन में सदैव इन दोनों देवात्माओं को भगवान संबोधन किया जाता है। कहीं इन दोनों महापुरुषों को परमात्मा ईश्वर, प्रभु आदि शब्दों में संबोधन नहीं मिलता है। ये दोनों असाधारण देवपुरुष हमारे सामने आदर्श रूप में रोल मॉडल हैं। इनके जीवन गुण-कर्म-स्वभाव आचरण योगदान आदि से प्रेरणा, शिक्षा व सन्देश मिलता है, मनुष्य चाहे तो वह भी गुण कर्म स्वभाव, आचरण, तप, त्याग, सेवा आदि से भगवान बन सकता है। यही तो महारुषों के जन्मदिन, जयन्तियां व पर्व मनाने की सार्थकता, उपयोगिता व व्यवहारिकता है। इनका चित्र-चरित्र तथा स्मरण भूले-भटके मानव को दिशा व रोशनी देते हैं।

सर्वमान्य, सर्व पूज्य, योगी, उपदेष्टा, नीतिनिपुण सर्व हिताकारी कर्मयोगी, मार्ग दर्शक, खण्ड-खण्ड भारत को अखण्ड देखने वाले स्वप्न द्रष्टा आदि के रूप में सामने आते हैं। महाभारत के भीष्म पर्व में द्रोणाचार्य का यह कथन सत्य है-

यतो धर्मस्तत: कृष्ण: यत: कृष्णस्ततो जय: अर्थात् जहाँ धर्म है, वहां श्रीकृष्ण हैं और जहां श्रीकृष्ण है वहां विजय होगी। महाभारत में श्रीकृष्ण ने राष्ट्रनायक की भूमिका बड़ी कुशलता, कूटनीति निपुणता और सक्रियता से निभाई है, संसार उनके इस कर्म कौशल के आगे नतमस्तक है। उन्होंने जो कार्य किए उनमें अपनी पहिचान व छाप छोड़ी है। गायें चराई तो गोपाल, बॉसुरी बजाई तो मुरलीधर, अर्जुन का रथ हाँका तो सारथी, सेवा की तो सेवक, सुदामा-मित्रता आदि सभी कार्यों में इतिहास बनाया। जितने नाम लोक में श्रीकृष्ण को मिले, उतने अन्य किसी महापुरुष को नहीं मिले। सभी नामों को उन्होंने सार्थक किया। तप, त्याग, सेवा, सहयोग पूर्ण श्रीकृष्ण से सम्बन्धित ऐतिहासिक, प्रेरक शिक्षाप्रद प्रसंग इतने हैं कि अलग से पुस्तक बन जाय। सच्चे अर्थ में श्रीकृष्ण को देखना, समझना, पढ़ना व सीखना है तो महाभारत में श्रीकृष्ण की भूमिका कर्मकुशलता एवं कूटनीतिज्ञ स्वरूप को समझना होगा तभी भीष्म पितामह को कहना पड़ा था-

कृर्ष्णं वन्दे जगत गुरुम्

श्रीकृष्ण सहीअर्थ में संसार के मार्गदर्शक, शुभ चिन्तक और मानव मात्र के हितैषी हैं।

- शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 3 का शेष

विश्वविद्यालय परिसर में की गई व्यवस्थाएं भी इतनी उत्तम थी कि जिनकी जितनी प्रशंसा की जाय वह कम ही होगी। आप मीटिंग में यदि थक गए हैं तो बाहर आकर आगन्तुकों की हलचल को देखें, जूस, चाय-कॉफी आदि प्राप्त करें और फिर आप सभागार में पहुँच जाएं, अर्थात आपकी थकान को दूर करने के लिए शुद्ध जलपान इन भवनों के सामने भी लगाया गया था, छोटे सभागार जिनमें समानान्तर सत्र चल रहे थे, वे सभी इतनी सुंदरता के साथ सजाए गए थे कि उनकी सुंदरता देखते ही बनती थी।

प्रथम दिन का कार्यक्रम संपन्न होने पर सायंकालीन सत्र मुख्य सभागार में बच्चों के कार्यक्रम के साथ चला, अमेरिका के विभिन्न शहरों से पधारे हुए बालक बालिकाओं एवं अन्य स्थानों से पधारे आर्यजनों के दलों ने सुंदर सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी, मॉरीशस की भजन टीम ने प्रस्तुति दी, गयानावासियों के द्वारा न्यूयार्क के क्वसि आयरलैंड क्षेत्र में जो महर्षि दयानंद गुरुकुल खोला गया है, इसका संचालन गयानी वैदिक विद्वान् डॉ सतीश प्रकाश जी कर रहे हैं, उनके छात्र-छात्राओं ने भी प्रस्तुतियां दी, आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भी अपनी प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। इसी प्रकार द्वितीय दिवस का कार्यक्रम प्रात: कालीन योग के साथ प्रारंभ हुआ दूसरे दिन योग का प्रशिक्षण भारत से पधारे योगाचार्य आचार्य ओमप्रकाश जी ने दिया। जलपान के उपरान्त सामवेद पारायण का द्वितीय दिवस चला जिसमें अनेक आर्यजनों एवं बहिनों ने बड़ी श्रद्धा के साथ आहुतियां प्रदान की। मुख्य सभागर में प्रात: 10 बजे से 1 बजे तक संयुक्त सत्र के रूप में चला जिसमें दक्षिण अफ्रीका के युवा संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी व भारत से ऑनलाइन माध्यम से योग गुरु स्वामी रामदेव जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ, इसी सत्र में मेरा भी व्याख्यान आर्यसमाज के नियमों का दैनिक जीवन में उपयोग विषय पर हुआ, सभी वक्ताओं के पूर्व निश्चित विषय थे, जिन पर 20-20 मिनट अपने विचार रखने थे, मध्य में आर्यवीर वीरांगनाओं की सुंदर प्रस्तुति भी होती रही। भोजन उपरांत इसी प्रकार समानांतर सत्र दो-तीन सभागारों में चलते रहे और दूसरे दिवस भी सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की कोर कमेटी के रूप में सभी देशों के प्रतिनिधियों ने आर्य समाज में आने वाली समस्याओं उनके समाधानों और संगठन को सुदृढ़ करने के सूत्रों पर चर्चा की जिसमें सभी देशों के अधिकारियों व मुख्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसकी अध्यक्षता श्री विनय आर्य जी ने की संचालन हूस्टन से श्री संजय जैन जी ने किया। इस कोर कमेटी में एक सदस्य के रूप में मुझे भी दोनों दिन प्रतिभाग करने का और सुझाव देने का अवसर मिला, भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई और योजनाएं प्रत्येक देश की परिस्थितियों के अनुसार कैसे चलें, इस पर विचार विमर्श हुआ।

द्वितीय दिवस के सायंकालीन सत्र में भी रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही जिसमें अनेक प्रेरक प्रस्तुतियां दी गईं, न्यूयॉर्क की आर्य समाजों की आर्य बहिनों/ महिलाओं ने बहुत सुंदर संगीत एवं लघु नाटकों के साथ प्रस्तुति दी। भारत के स्वतंत्रता की सूत्रधार क्रांति 1857 को लेकर भी एक प्रस्तुति हुई जिसमें श्री विनय आर्य जी के द्वारा लिखित गीत को प्रस्तुत किया गया।

तृतीय दिवस प्रात: कल हॉकी के मैदान पर योग के साथ ही प्रारंभ हुआ तृतीय दिवस का योग न्यूजर्सी अमेरिका में ही योग की अलख जगा रहे डॉ देवकेतु जी द्वारा करवाया गया, तदुपरान्त जलपान आदि के उपरांत यज्ञशाला में सामवेद यज्ञ की पूर्णाहुति का क्रम था जिसमें मंच की शोभा बढ़ाने वाले सन्यस्त वृन्द के अतिरिक्त वृद्वज्जन, यज्ञब्रह्मा, वेदपाठीगण एवं अमेरिका की आर्यसमाजों के आचार्यगण व भारत से पधारे वृद्वज्जन उपस्थित थे।

यज्ञ की पूर्णाहुति अत्यंत भव्यता के साथ हुई , आशीर्वाद की प्रक्रिया के साथ सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। समापन सत्र मुख्य सभागार में 10 बजे प्रारंभ हुआ जिसमें सभी संन्यासी, विद्वान् आचार्यों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया साथ ही सभी देशों के आर्यप्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों को सम्मानित किया गया, सम्मान के क्रम में आर्यप्रतिनिधि सभा अमेरिका के संस्थापक श्री गिरीश खोसला जी को नीचे जाकर सभी संन्यासियों द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया, जिनके प्रयासों व मार्गदर्शन से ही सभा सशक्त हुई एवं इतने बड़े आयोजन को करने में सफल हुई। सम्मान के कार्यक्रम का संचालन श्री विनय आर्य जी ने किया जिसमें उन-उन देशों में हो रहे कार्यों व गतिविधियों का विशेष वर्णन किया। इस सम्मेलन की स्मारिका का विमोचन मंचस्थ वृद्वज्जनों व अधिकारियों ने किया। समापन सत्र में श्री विनय आर्य जी, स्वामी देव व्रत जी, नैरोबी के डॉ आर. के. सैनी जी आदि के व्याख्यान हुए। श्री विनय आर्य जी का अत्यंत प्रेरक और आर्य समाज का वर्तमान में जो स्वरूप है और पूरे विश्व के लोगों का मार्गदर्शन कर रहा है उस पर विशेष व्याख्यान दिया गया। समापन सत्र में अन्य वक्ताओं के उद्बोधन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति एवं बालक बालिकाओं द्वारा वेद पाठ का प्रस्तुतीकरण, पंडित दिनेश जी के भजनों की धूम रही। समापन सत्र का संचालन सभा प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी महामन्त्री श्री विश्रुत आर्य जी ने किया, इसी सत्र में संकल्प भी लिए गए तथा 2025 में भारत में होने वाले आर्य महासम्मेलन की घोषणा की गई , उससे पूर्व अपने-अपने देश में आयोजनों को करेंगे और आर्यों की उपस्थिति बढ़ाने का कार्य करेंगे, उत्तम संकल्पना के साथ इस भव्य कार्यक्रम समापन हुआ। इस कार्यक्रम की कुछ विशेषताएं जो मध्य में रह गई हैं उससे अवगत कराना आवश्यक है कि जिन-जिन आर्य समाजों से प्रतिनिधि यहां आए थे उनके स्वागत में अमेरिका देश के प्रतिनिधि पूरी भावना एवं मनोयोग के साथ लगे हुए थे, जिसमें बड़े-बड़े आईटी कंपनीज के उच्चाधिकारी, चिकित्सा क्षेत्र की महान् हस्तियां व विद्वान् आचार्यगण व आर्य बहिनें थी लेकिन वे एक स्वयंसेवक की तरह ऐसा कार्य कर रहे थे जैसे कि किसी गुरुकुल के आचार्य स्नातक हों, पूरे मन से इस आयोजन में सहभागिता देखने लायक थी, अमेरिका की आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी पदाधिकारी जिनका नेतृत्व श्रीमान भुवनेश खोसला जी प्रधान के रूप में, श्री विश्रुत आर्य जी मंत्री के रूप में, श्री कुल भूषण गुलाटी जी कोषाध्यक्ष के रूप में कर रहे थे। इनके साथ ही स्थानीय संयोजन समिति में सभा के पूर्व प्रधान डॉ रमेश गुप्ता जी व न्यूयार्क आर्यसमाज के प्रधान श्री रणवीर कुमार जी का अपूर्व योगदान रहा। संचालन समिति से जुड़े हुए उप प्रधान, उप मंत्री व कार्यकारिणी सदस्य सभी आर्यजन सर्वात्मना समर्पण से इस आयोजन को सफल करने में सन्नद्ध रहे उनकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। साथ ही विश्व के 16 देशों की प्रतिभागिता एक हर्ष का विषय थी अमेरिका की भूमि पर पहली बार 800 से 900 आर्यजनों का उपस्थित होना, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के रूप में पधारना भी हर्ष का विषय था। प्रत्येक मंच पर भगवा वेश में संन्यासियों का उपस्थिति होना भी हर्ष का विषय था। प्रत्येक आर्यसमाज से कोई ना कोई प्रस्तुति होना भी हर्ष का विषय था, न्यूयार्क न्यूजर्सी के आसपास की समाजों के स्वयं सेवकों ने जो कार्य किया वह तो प्रशंसनीय था ही, उससे कहीं अधिक अटलांटा की टीम का उत्साह देखने लायक था। किसी के उत्साह में कमी नहीं थी पर अटलांटा जैसे दूरस्थ स्थान से आकर इन सब महिला बहिनों एवं आचार्यों का एक कार्यकर्ता की तरह स्वयं को समर्पित रखना अत्यंत प्रशंसनीय कार्य है।

सम्मेलन की सफलता के लिए आयोजकों के पूरे दल को एवं पधारे हुए आर्यजनों को हार्दिक साधुवाद। यात्रा के कष्ट को सहते हुए पधारे हुए संन्यासियों के साथ-साथ सभी आचार्यगणों, आर्यजनों एवं मातृशक्ति को नमन करता हूं जो सम्मेलन में पधारे। जो भी ऋषि मिशन के प्रति सर्वात्मना समर्पण से कार्य कर रहे हैं उनकी चर्चा हमें अवश्य करनी चाहिए और जो कार्यकर्ता इतने भव्य आयोजनों को करने में अपना तन-मन-धन अर्पित कर रहे हैं उनका विशेष नमन मेरी ओर से है।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका भविष्य में भी ऐसे बड़े आयोजन कर सके ऐसी शक्ति परमात्मा दे, यह मैं प्रार्थना करता हूं। अन्य देशों में भी ऐसे ही भव्य सम्मेलन आयोजित हों, उसके लिए भी हमारा प्रयास रहेगा।

Continue From Last Issue

In Delhi-Durbar and towards Punjab

On January 1, 1877 AD, a grand durbar was to be held in Delhi on the occasion of the proclamation of Queen Victoria as the Empress of India. The preparations were being done with great pomp and show. There was hope of the arrival of Kings and emperors from all over the country in Delhi. Maharishi Dayanand ji returned from Bombay and was traveling in Sanyukta province. He got the news of the Darbar. The person who has taken the responsibility of telling the truth to the whole world, where could he have got a better opportunity than this! There were mainly two temptations for Maharishiji. Firstly, he had a strong desire that he should succeed in creating love for the true Arya religion in the hearts of the Kings of Aryavarta. His feeling was that until the country's rich man do not improve, the subjects cannot improve. If some men how the condition of the nobles can be improved, the condition of the general public can be changed without much effort. For this reason, his desire was that somehow the message of truth should be conveyed to the ears of the Kings across the country. The second allurement that beckoned the dabar was that Maharishiji was obsering many powers working in the country. On the one hand, there was the Brahmo Samaj, whose reins were in the hands of Babu Keshavchandra at that time. On the other hand, there was a wave started by Sir Syed Ahmed, whose purpose was to wake up the Muslims. There were many powerful institutions, but the purpose of all was visible. The same truth was being illuminated in different ways. Maharishiji's talent was not only to judge and suggest step to improve, it had the power to judge equality in the biggest differences. Maharishiji did not want to create discrimination only, on the basis of the goodness left after the evils were removed, he also resolved to unite the whole human race in the thread of unity. The following quote from Satyarth Prakash will reveal the intention of Swamiji-

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login www.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 5 का शेष

प्रेरक जीवन के धनी

महाभारत से श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी जीवन को संभालने, सुधारने व ऊंचा उठाने वाले उज्जवल उदाहरण भरे पड़े हैं। हम स्वाध्याय से दूर हो रहे हैं, हमने अपने महापुरुषों के सत्य इतिहास को पढ़ना-सुनना छोड़ दिया है। उसी का परिणाम है जो जन्माष्टमी, कृष्ण लीलाओं, रास लीलाओं, सीरियलों, पिक्चरों, नाटकों, चैनलों, लोककथाओं, साहित्य आदि में जो श्रीकृष्ण का चरित्र पढ़ाया-सुनाया दिखाया बताया व बोला जा रहा है-उसी को सत्य वचन महाराज, **बाबा वाक्यं प्रमाणम्** कह कर, हाथ जोड़ सिर नीचा कर बिना सोचे, समझे, विचारे स्वीकार कर रहे हैं। इस कारण भी ढोंग, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास बढ़ रहा है।

गीता जैसा अमूल्य ग्रन्थ महाभारत का ही अंग है। विश्व के आध्यात्म क्षेत्र में गीता के माध्यम से भारत की एक विशेष पहिचान बनी है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण योगेश्वर के रूप में गीताज्ञान का अमर सन्देश देते दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने गीता में निष्काम कर्म करते हुए जीवन- लक्ष्य-मोक्ष तक पहुँचने का जीवन सन्देश दिया है। गीता में श्रीकृष्ण का उच्च व दिव्य योगीराज का स्वरूप प्रकट हुआ है।

गीता के माध्यम से श्रीकृष्ण का आध्यात्म व योगी रूप सामने आता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे हिमालय के उच्च शिखर पर खड़ा कोई योगी-आत्मा-परमात्मा जीवन-मृत्यु, कर्म-अकर्म आदि का चिन्तन व सन्देश दे रहा हो। संसार गीता के श्रीकृष्ण को भूल रहा है, पुराणों के श्रीकृष्ण को मानव पकड़ रहा है। अर्जुन के माध्यम से वर्तमान-जीवन-जगत को स्वस्थ, सुखी एवं शान्त जीवन का व्यावहारिक समाधान और उपदेश दिया है। गीता का अमर सन्देश है ड्यूटी में ब्यूटी लाओ। यही **योगः कर्मसु कौशलम्** है। जो कार्य करो तन्मयता, कुशलता व पूर्णत्य से करो।

सुविज्ञ पाठक सोच, समझ और विचार पूर्वक निर्णय कर सकते हैं कि महाभारत और गीता के भगवान श्रीकृष्ण योगेश्वर हैं और कहां पुराणों भागवद् लोक कथाओं, रासलीलाओं, जन्माष्टमी, सीरियलों आदि के श्रीकृष्ण भोगेश्वर के रूप में वर्णित हैं, इसमें जमीन आसमान का अन्तर है। दुनिया श्रीकृष्ण को क्या से क्या बना रही है?

-मो. 9810305288

पृष्ठ 4 का शेष

शिक्षा के साथ बच्चों को संस्कार .....

नागालैण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली आदि में गुरुकुल, विद्यालय, छात्रावास और विशेष रूप से बालवाड़ी जैसे सेवा प्रकल्प मानव निर्माण का कार्य करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। इस क्रम में संघ द्वारा बालवाड़ी के प्रकल्प को और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए दिल्ली में 10 दिवसीय बालवाड़ी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर 13 अगस्त 2024 को समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस रचनात्मक और मानव कल्याण के शिविर का उद्घाटन 4 अगस्त 2024 को आर्य गुरुकुल रानी बाग में हुआ था। जिसमें 6 राज्यों के 3 दर्जन से अधिक शिक्षकों को विधिवत प्रशिक्षण प्रदान किया गया। युवक-युवतियों के रूप में उपस्थित शिविरार्थियों को यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, समर्पण, भजन-संगीत, मंत्र पाठ, कौशल विकास आदि विषयों की शिक्षा सुयोग्य शिक्षकों के निर्देशन में प्रदान की गयी। प्रतिदिन प्रातः योगासन से लेकर संध्या हवन, नैतिक शिक्षा, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा को अत्यंत रोचक तरीके से सिखाया गया। इस शिविर का समापन एवं दीक्षांत समारोह 13 अगस्त 2024 को आर्य गुरुकुल रानी बाग में संपन्न हुआ। जिसमें अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के चैयरमेन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने अपने वर्चुअल संदेश में सभी शिक्षक और शिक्षिकाओं को शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद देते हुए कहा कि मानव जीवन में शिक्षा जितनी जरूरी है, उससे भी अधिक संस्कारों का महत्व है।

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ सभी को शिक्षित और संस्कारित करने लिए संकल्पित है। आप सभी यहां से शिक्षा लेकर बच्चों को पढ़ाएंगे और साथ में संस्कार भी प्रदान करेंगे, जिससे सही मायने में मानव निर्माण संभव होगा। आप सभी को मेरी शुभकामानाएं और आशीर्वाद है, आप सभी आगे बढ़ें और दूसरों को भी उन्नत जीवन जीने के लिए शिक्षित करें। इस अवसर पर अमेरिका से श्री भूषण वर्मा जी ने अपने संदेश में कहा कि आज का समारोह कई मायने में विशेष है, यह बच्चों के भविष्य का आधार है, यह अपने आप में बड़ी जिम्मेदारी है, आप बच्चों के भविष्य को तराशेंगे और आपसे शिक्षा और संस्कार पाकर बच्चे भारत के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। हमारा योगदान छोटा है और आपका प्रयास बड़ा है, आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं और सभी अधिकारियों को बधाई। इस क्रम में श्री देव महाजन जी ने भी अपने संक्षिप्त उद्बोधन में अधिकारियों को बधाई दी और बच्चों को शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया। श्री ईश्वर सिंह जी ने अपने संदेश में कहा कि भारत में बच्चों को एजुकेशन तो मिल जाती है मगर संस्कार नहीं मिल पाते, यहां शिक्षा के साथ संस्कार प्रदान करने का यह कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। उन्होंने सभी अधिकारियों, शिक्षकों को बधाई दी और इस प्रकल्प की सफलता के लिए भगवान से प्रार्थना की।

श्री देव महाजन, श्री भूषण वर्मा और श्री ईश्वर सिंह ने इस पहल की सराहना की और नए बालवाड़ी केंद्रों को प्रायोजित करने के लिए वित्तीय समर्थन की पेशकश की। श्री जोगेन्द्र खट्टर ने उनके समर्थन के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। समारोह में उपस्थित प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों में श्री विनय आर्य (महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री सतीश चडडा (महामंत्री, आर्य केंद्रीय सभा), श्री सुरेन्द्र आर्य (प. वेद प्रचार मंडल), श्री वीरेंद्र सरदाना और श्री विनोद कालरा शामिल थे। इस प्रशिक्षण शिविर में अपना समय समर्पित करने वाली मार्गदर्शक टीम में श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती उषा रिहानी, श्रीमती उमा शशि दुर्गा, श्रीमती नीरज मोंदीरत्ता, श्रीमती अंजलि कपूर और श्रीमती तृप्ता शर्मा आदि शामिल थे। प्रशिक्षुओं ने अपने अनुभव और सीख को उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ साझा किया।

- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री

पृष्ठ 4 का शेष

बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं की रक्षा ...

11 अगस्त 2024 को दिल्ली की समस्त आर्य समाजों में बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार का विरोध करते हुए मृतकों को मौन श्रद्धांजलि अर्पित की थी।

अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के प्रति जागरुक हों और अंतरिम सरकार अल्प संख्यकों पर अत्याचार बंद करे, उनकी हत्या बंद करे, उनकी जो प्रॉपर्टी है उसको लूटना बंद करे, किसी की जान-माल को ख़तरा न हो यह सुनिश्चित करे, वहाँ पर जो मंदिर, गिरजाघर और लोगों की प्रॉपर्टी हैं उन पर तुरंत लूटपाट बंद होनी चाहिए। इसी भावना से रोष व्यक्त करते हुए राजार्य सभा के अध्यक्ष श्री रविदेव गुप्ता जी ने कहा कि बांग्लादेश का जन्म दाता भारत है, जब हम जन्म देना जानते हैं तो विनष्ट करना भी जानते हैं। अतः बांग्लादेश में एक करोड तीस लाख अल्पसंख्यक हिंदुओं पर किया जा रहा अत्याचार अत्यंत असहनीय और अमानवीय है। वहां की अंतरिम सरकार आतातायियों पर तुरन्त रोक लगाए और वहां पर अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को सुनिश्चित करे।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जी ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास के प्रसंग में हैदराबाद सत्याग्रह का वर्णन करते हुए बताया कि जब-जब हिंदुओं पर आंच आई तब-तब आर्य समाज ने सजग प्रहरी बनकर अपना कर्तव्य निभाया और मानवता की रक्षा की। आज बांग्लादेश की भयावह स्थिति को देखकर हम केवल चिंतित नहीं हैं बल्कि हमें चिंतन भी करना चाहिए कि भविष्य में भारत में रहने वाले जो अल्प संख्यक हैं, वो कितने क्रूर और नृसंश हो सकते हैं। आपने उपस्थित जन समूह से बांग्लादेश में हिंदुओं की रक्षा के नारे भी लगवाए। वक्ताओं के इस क्रम में श्री कीर्ति शर्मा जी ने 1971 से लेकर अब तक बांग्लादेश में हिंदुओं की घटती हुई जनसंख्या के आंकड़ों को प्रस्तुत करते हुए बताया कि वहां 22 प्रतिशत से घटकर आज 8 प्रतिशत हिंदु ही बचे हैं। उन्होंने अपने आंकड़ों में बताया कि कब-कब हिंदुओं के ऊपर बांग्लादेश में जानलेवा हमले किए गये और उन्हें मौत के घाट उतारा गया। हिंदुओं को जागना चाहिए, भारत में हम 100 करोड़ हैं हमें अपने भाईयों की रक्षा के लिए व्यवस्था करनी चाहिए और सरकार को ठोस कदम भी उठाने चाहिए। वक्ताओं के इस क्रम में श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री सतीश चड्डा, श्री वीरेन्द्र सरदाना, डॉ. मुकेश आर्य, श्री कृपाल सिंह आर्य, डॉ. सत्यकाम जी, श्री सुखवीर सिंह आर्य, श्री गजेन्द्र सिंह चौहान, श्री जयपाल गर्ग, श्री तेजवीर सिंह, श्रीमती विद्यावती आर्या जी इत्यादि महानुभावों ने उद्बोधन दिया। इस अवसर पर ओम् के झण्डे हाथ में लेकर बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के ऊपर हो रहे अत्याचार के विरूद्ध गगन भेदी नारे लगाए गये, आर्य समाज की युवा शक्ति ने रोष व्यक्त करते हुए बीच-बीच में हिंदू भाई होश में आओ, हिंदू भाई जागो रे-जागो रे के नारे लगाए, प्रदर्शन में उपस्थित स्त्री, पुरुष, बच्चों और युवाओं ने पैदल मार्च भी निकाला, जिसमें हाथों में बैनर और ओम् ध्वज लेकर आर्य समाज के अधिकारी नेतृत्व कर रहे थे। पुलिस और बैरीगेट तक आर्यजनों ने अपना रोष प्रदर्शन व्यक्त किया और मृतकों की अत्माओं की शान्ति के लिए दो मिनट का मौन और शान्ति पाठ के साथ इस धरना प्रदर्शन का समापन हुआ। इस अवसर पर प्रारम्भ से ही वर्षा लगातार हो रही थी लेकिन आर्यो के जोश पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सभी आर्यजन पूरे आक्रोश में दिखे। पूरे कार्यक्रम का संचालन श्री सतीश चड्डा जी ने किया और व्यवस्था श्री बृहस्पति आर्य, महामंत्री, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के नेतृत्व में की गयी थी। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 2 का शेष

कोलकाता केस - कहीं अपराधी....

9 अगस्त को यह मामला सामने आया और 10 अगस्त तक ही 4 रेप के मामले न्यूज में आ चुके थे। यह सिर्फ रिपोर्टेड मामले हैं जो न्यूज में आए। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) की रिपोर्ट के मुताबिक, हर रोज भारत में औसतन 86 रेप के मामले रिपोर्ट किए जाते हैं। हर 16 मिनट में एक रेप के साथ भारत में रेप और सेक्शुअल असॉल्ट की घटनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही हैं। इस एवरेज के मुताबिक, महीने भर में 2580 से लेकर 2666 रेप होते हैं। ऐसे में साल भर में 31,390 रेप के मामले सामने आते हैं। यह रिपोर्टेड मामले हैं और इनके अलावा, ऐसे कई मामले होंगे जिन्हें रिपोर्ट ही नहीं किया गया होगा।

जहां एक ओर पूरी दुनिया इस मामले के खिलाफ आवाज उठाने को तैयार है, वहीं कितने वहशी दरिंदे अभी भी भारत में घूम रहे हैं। देश के हर कोने से एक ही आवाज आ रही है कि आखिर इतने अपराधों के बीच हम कैसे खुद को एक समृद्ध समाज कह सकते हैं। हमारे देश में जितनी भी घटनाएं हो रही हैं, उन्हें लेकर तरह-तरह की राजनीतिक दलीलें दी जा रही हैं, लेकिन नतीजा सिर्फ यही है कि देश में महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ ही रहे हैं, कम होने का नाम नहीं ले रहे। समय की पुकार है, सब बंद होना चाहिए। सरकारों के भरोसे मत बैठिए, ये काम सिर्फ सरकार के भरोसे नहीं हो सकता, सामाजिक स्तर पर भी इसके प्रयास होने चाहिए। वरना कोई कोलकाता की अभया, कोई दिल्ली की निर्भया, कहीं कोटखा की गुडिया चीखती सुनाई देगी।

- सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 अगस्त, 2024 से रविवार 25 अगस्त, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 22-23-24/08/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21, अगस्त, 2024

आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं

- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

प्रतिष्ठा में,

अखिल भारतीय भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा ने मनाया
78वां स्वतन्त्रता दिवस

अखिल भारतीय भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा व आर्यसमाज आर्य नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली 13 अगस्त 2024 को 78वां स्वतन्त्रता दिवस समारोह हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ प्रात: 9 बजे से 10 बजे तक आचार्य भद्रकाम वर्णी जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण सर्वश्री श्रद्धानन्द बग्गा, विजय कपूर, जनमेजय राणा, चन्द्रमोहन कपूर, इन्द्र गुप्त, संजीव कोहली के द्वारा किया गया। तत्पश्चात् आर्य वैदिक पाठशाला कन्या व बाल के बच्चों एवं आर्ष गुरुकुल आर्य नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा सम्भाषण, गीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री विनय आर्य जी एवं श्री एम.सी सक्सेना की गरिमामयी उपस्थिति रही। श्री विनय आर्य जी ने सम्बोधित करते हुए बच्चों से कहा कि वे ईमानदार नागरिक बनें और राष्ट्र की सेवा करें। प्रधान जी के धन्यवाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह